Nehru Yuva Kendra Sangathan
नेहरु युवा केन्द्र संगठन
साथ साथ
कल की ओर...

सत्यमेव जयते
MINISTRY OF YOUTH AFFAIRS & SPORTS
Government of India

राष्ट्रीय सेवा योजना
NATIONAL SERVICE SCHEME

नेहरु युवा केन्द्र संगठन, रायपुर, छत्तीसगढ़

EK BHARAT SHRESHTHA BHARAT
एक भारत श्रेष्ठ भारत

युवा एक भारत श्रेष्ठ भारत कार्यक्रम

प्रतिभागी राज्य छत्तीसगढ़– गुजरात

EK BHARAT SHRESHTHA BHARAT
एक भारत श्रेष्ठ भारत
Ek Bharat Shreshtha Bharat

एक भारत श्रेष्ठ भारत - दृष्टिकोण

“ सरदार पटेल जी ने हमें 'एक भारत' दिया। अब यह 125 करोड़ भारतीयों का सामूहिक कर्तव्य है कि सामूहिक रूप सेइसे 'श्रेष्ट भारत' (सबसे प्रमुख भारत) बनाना है। हम सब सरदार साहिब के जीवन और योगदान से प्रेरणा ले कर ऐसा कर सकते हैं। “

नरेंद्र मोदी, प्रधान मंत्री

एक भारत श्रेष्ठ भारत - अभिनव पहल

- सरदार वल्लभभाई पटेल की 140वीं जयंती के अवसर पर 31 अक्टूबर, 2015 को माननीय प्रधानमंत्री ने "एक भारत श्रेष्ठ भारत" की घोषणा की थी ।
- इसके बाद, वित्त मंत्री ने 2017-18 के लिए अपने बजटीय भाषण में इन पहलों के बारे में घोषणाएं की।
- इस अभिनव उपाय के माध्यम से, विभिन्न राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों की संस्कृति, परंपराओं और प्रथाओं के ज्ञान से राज्यों के बीच एक बेहतर समझ और जुड़ाव होगा, जिससे भारत की एकता और अखंडता को मजबूत किया जा सकेगा।

एक भारत श्रेष्ठ भारत - व्यापक उद्देश्य

- हमारे राष्ट्र की विविधता में एकता के गौरव को महसूस करें और हमारे देश के लोगों के बीच परंपरागत रूप से मौजूदा भावनात्मक बंधनों के संबंधों को बनाए रखने में मजबूती प्रदान करना।
- राष्ट्रीय एकता की भावना को बढ़ावा देना के लिए एक वार्षिक योजनाबद्ध भागीदारी के माध्यम से सभी राज्यों एवं केंद्र शासित प्रदेश के बीच एक गहन और ढांचेगत भागीदारी का निर्माण करना।
- लोगों को प्रांत की समृद्ध विरासत और संस्कृति, रीति-रिवाजों और परंपराओं से अवगत कराना जिससे वे भारत की विविधता के बारे में लोगों को समझाने और उनकी सराहना करने के योग्य बनें, इसी प्रकार से संयुक्त पहचान को अंगीकार करने को बढ़ावा देना।
- दीर्घकालिक भागीदारी का निर्माण करना तथा
- एक ऐसा वातावरण बनाना जो राज्यों के बीच सर्वोत्तम प्रथाओं और अनुभवों को साझा करके शिक्षण को बढ़ावा देता हो।

एक भारत श्रेष्ठ भारत

प्रतिभागी राज्य – छत्तीसगढ़ – गुजरात

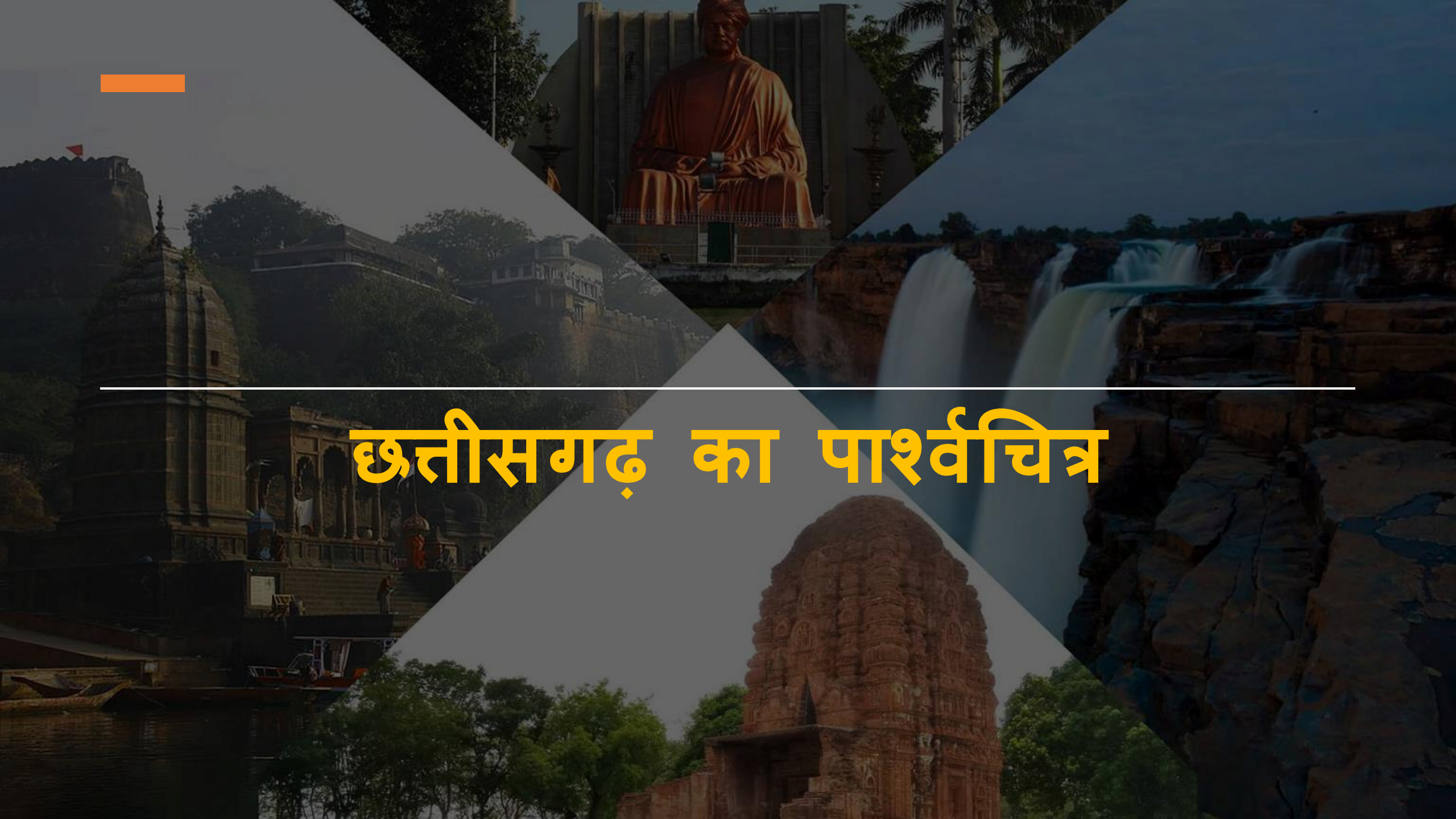

छत्तीसगढ़ का पार्श्वचित्र

छत्तीसगढ़ का पार्श्वचित्र

- इसका गठन 1 नवम्बर 2000 को हुआ था और यह भारत का 26वां राज्य है।
- पहले यह मध्य प्रदेश के अन्तर्गत था।
- डॉ॰ हीरालाल के मतानुसार छत्तीसगढ़ 'चेदीशगढ़' का अपभ्रंश हो सकता है। कहते हैं किसी समय इस क्षेत्र में 36 गढ़ थे, इसीलिये इसका नाम छत्तीसगढ़ पड़ा। किंतु गढ़ों की संख्या में वृद्धि हो जाने पर भी नाम में कोई परिवर्तन नहीं हुआ।
- छत्तीसगढ़ भारत का ऐसा राज्य है जिसे 'महतारी'(मां) का दर्जा दिया गया है।
- **धान का कटोरा** के नाम से भी जाना जाता है।

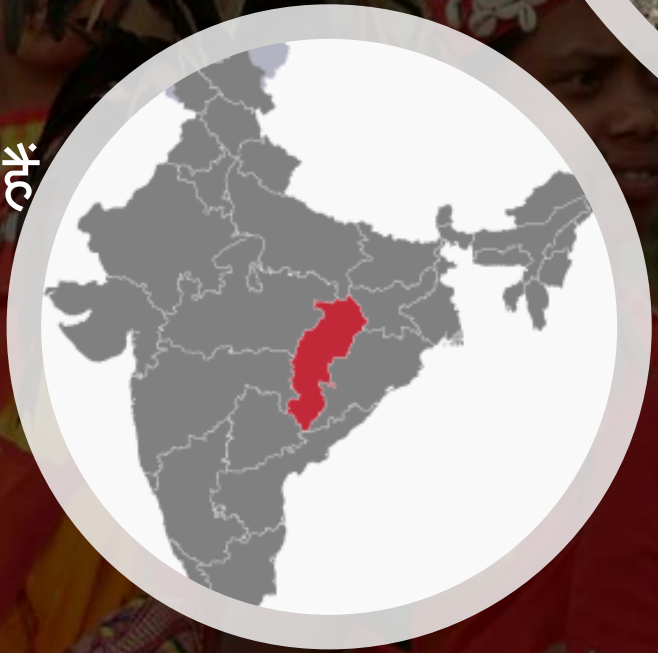

छत्तीसगढ़ का पार्श्वचित्र

- छत्तीसगढ़ की शहरी आबादी 23.4% है (2011 में लगभग 5.1 मिलियन लोग) शहरी क्षेत्रों में रहते हैं।
- भारत सरकार की एक रिपोर्ट के अनुसार, कम से कम 34% अनुसूचित जनजाति हैं
- 12% अनुसूचित जाति हैं और 50% से अधिक अन्य पिछड़ा वर्ग की आधिकारिक सूची से संबंधित हैं
- यहा के मैदानी इलाको में तेली, सतनामी और कुर्मी जैसी जातियों का संख्यात्मक वर्चस्व है
- जबकि वन क्षेत्र मुख्य रूप से गोंड, हल्बा, कमर / बुजिया और उरांव जैसे जनजातियों हैं।

छत्तीसगढ़ – मानव विकास सूची

- 2011 तक छत्तीसगढ़ राज्य का मानव विकास सूचकांक मूल्य 0.537 (मध्यम) था, जो भारतीय राज्य में 23 वें स्थान पर था। 2011 की भारतीय राष्ट्रीय एनएचडीआर रिपोर्ट के अनुसार राष्ट्रीय औसत 0.467 है।

- जीवन स्तर:
  - छत्तीसगढ़ में जीवन स्तर बेहद असंतुलित है।
  - दुर्ग, रायपुर, भिलाई और बिलासपुर जैसे शहरों में उच्च जीवन स्तर का एक माध्यम है
  - जबकि ग्रामीण और वन क्षेत्रों में बुनियादी संसाधनों और सुविधाओं का अभाव है।
  - उदाहरण के लिए भिलाई में साक्षरता दर 86% है, जबकि बस्तर में साक्षरता दर 54% है

छत्तीसगढ़ – मानव विकास सूची

- **शिक्षा सूचकांक:**
  - 2011 एनएचडीआर के अनुसार छत्तीसगढ़ में 0.526 का शिक्षा सूचकांक है, जो बिहार, झारखंड, उत्तर प्रदेश, राजस्थान राज्यों से अधिक है।
  - शहरी क्षेत्रों के लिए छत्तीसगढ़ में औसत साक्षरता दर 84.05 प्रतिशत थी जिसमें पुरुष 90.58% साक्षर थे जबकि महिला साक्षरता 73.39% थी। छत्तीसगढ़ के शहरी क्षेत्र में कुल साक्षर 4,370,966 थे

- **स्वास्थ्य सूचकांक:**
  - 2011 की जनगणना के अनुसार, राज्य में जनसंख्या की 25.5 मिलियन और छह मेडिकल कॉलेजों (पांच सरकारी और एक निजी) में 700 छात्रों की सेवन क्षमता और 1: 17,000 के डॉक्टर मरीज का अनुपात है।
  - नीति आयोग ने हेल्थ इंडेक्स रिपोर्ट जारी की, जिसका शीर्षक था, "स्वस्थ राज्य, प्रगतिशील भारत।" - छत्तीसगढ़ का सूचकांक 52.02 में से 100 है, जो मध्य प्रदेश, हरियाणा, राजस्थान, ओडिशा, बिहार, असम और उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों से बेहतर है।

छत्तीसगढ़ की राजधानी - रायपुर

रायपुर

छत्तीसगढ़ की राजधानी - रायपुर

- रायपुर खारुन नदी के तट में बसा छत्तीसगढ़ का सबसे बड़ा शहर है।
- रायपुर एक बड़े मैदान (छत्तीसगढ़ का मैदान) के मध्य में स्थित है जो **धान का कटोरा** के नाम से भी जाना जाता है।
- रायपुर के पूर्व में महानदी नदी बहती है। उत्तर-पश्चिम में मैकाल की पहाड़ियां हैं। उत्तरी ओर छोटा नागपुर का पठार और दक्षिण में बस्तर का पठार है।

रायपुर

- 2011 की जनगणना के अनुसार: जनसंख्या - 10,10,087 | साक्षरता दर - 86.90%

- रायपुर का प्रशासनिक केन्द्र 'नया रायपुर' हैं। विश्व स्तरीय परियोजना है जिसमे एक नए शहर का सृजन किया गया है।

- रायपुर के पर्यटन स्थलों में नगरघड़ी है। यह हर घंटे छत्तीसगढ़ी लोक धुनें सुनाती है।

- बूढ़ा तालाब, यह शहर का सबसे बड़ा तालाब है जिसे स्वामी विवेकानंद सरोवर के नाम से भी जाना जाता है।

- दूधधारी मंदिर: हिन्दूओं के आराध्य भगवान राम का करीब 500 साल पुराना मंदिर है।

- महंत घासी दास संग्रहालय तथा राजीव गांधी ऊर्जा पार्क जो एक नागरिक वन है, यहां के अन्य दर्शनीय स्थल हैं। यहां सभी झूले सौर ऊर्जा से संचालित हैं।

छत्तीसगढ़ का इतिहास

छत्तीसगढ़ का इतिहास

छत्तीसगढ़ राज्य का निर्माण

- 2 नवंबर 1861 को मध्य प्रांत का गठन हुआ. इसकी राजधानी नागपुर थी. मध्यप्रांत में छत्तीसगढ़ एक ज़िला था
- 1862 में मध्य प्रांत में पांच संभाग बनाये गये जिसमें छत्तीसगढ़ एक स्वतंत्र संभाग बना, जिसका मुख्यालय रायपुर था
- सन 1905 में जशपुर, सरगुजा, उदयपुर, चांगभखार एवं कोरिया रियासतों को छत्तीसगढ़ में मिलाया गया तथा संबलपुर को बंगाल प्रांत में मिलाया गया. इसी वर्ष छत्तीसगढ़ का प्रथम मानचित्र बनाया गया
- सन 1918 में पंडित सुंदरलाल शर्मा ने छत्तीसगढ़ राज्य का स्पष्ट रेखा चित्र अपनी पांडुलिपि में खींचा अतः इन्हें छत्तीसगढ़ का प्रथम स्वप्नदृष्टा व संकल्पनाकार कहा जाता है

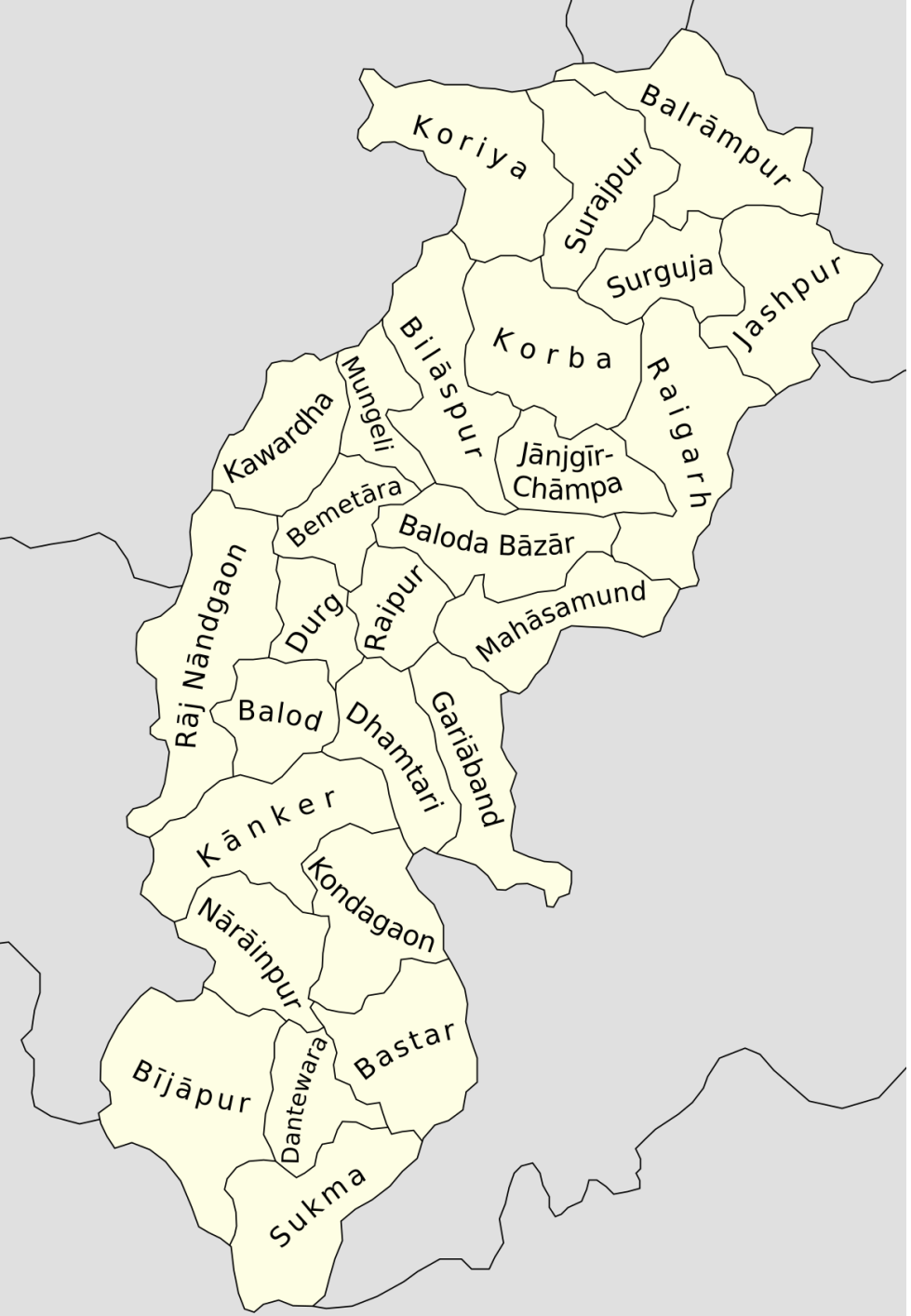

छत्तीसगढ़ का इतिहास

छत्तीसगढ़ राज्य का निर्माण

- सन् 1924 में रायपुर जिला परिषद ने संकल्प पारित करके पृथक छत्तीसगढ़ राज्य की मांग की
- सन् 1939 में कांग्रेस के त्रिपुरी अधिवेशन में पंडित सुंदरलाल शर्मा ने पृथक छत्तीसगढ़ की मांग रखी
- सन् 1946 में ठाकुर प्यारेलाल ने पृथक छत्तीसगढ़ मांग के लिए छत्तीसगढ़ शोषण विरोध मंच का गठन किया जो कि छत्तीसगढ़ निर्माण हेतु प्रथम संगठन था
- सन् 1955 रायपुर के विधायक ठाकुर रामकृष्ण सिंह ने मध्य प्रांत के विधानसभा में पृथक छत्तीसगढ़ की मांग रखी जो की प्रथम विधायी प्रयास था
- .सन् 1994 में तत्कालीन साजा विधायक रविंद्र चौबे ने मध्य प्रदेश विधानसभा में छत्तीसगढ़ निर्माण सम्बन्धी अशासकीय संकल्प प्रस्तुत किया गया जो सर्वसम्मति से पारित हुआ
- 1 मई 1998 को मध्यप्रदेश विधान सभा में छत्तीसगढ़ निर्माण के लिए शासकीय संकल्प पारित किया गया
- 1 नवंबर 2000 भारतीय संविधान के अनुच्छेद 3 के तहत छत्तीसगढ़ राज्य की स्थापना हुई. छत्तीसगढ़ देश का 26वां राज्य बना

प्राचीनकाल में छत्तीसगढ़

प्राचीनकाल में छत्तीसगढ़

- "छत्तीसगढ़" तो वैदिक और पौराणिक काल से ही विभिन्न संस्कृतियों के विकास का केन्द्र रहा है।

- यहाँ के प्राचीन मन्दिर तथा उनके भग्नावशेष इंगित करते हैं कि यहाँ पर वैष्णव, शैव, शाक्त, बौद्ध संस्कृतियों का विभिन्न कालों में प्रभाव रहा है।

- छत्तीसगढ़ प्राचीनकाल के दक्षिण कोशल का एक हिस्सा है। पौराणिक काल का 'कोशल' प्रदेश, कालान्तर में 'उत्तर कोशल' और 'दक्षिण कोशल' नाम से दो भागों में विभक्त हो गया था इसी का 'दक्षिण कोशल' वर्तमान छत्तीसगढ़ कहलाता है।

- इस क्षेत्र के महानदी (जिसका नाम उस काल में 'चित्रोत्पला' था) का मत्स्य पुराण, महाभारत के भीष्म पर्व तथा ब्रह्म पुराण के भारतवर्ष वर्णन प्रकरण में उल्लेख है।

प्राचीनकाल में छत्तीसगढ़

- वाल्मीकि रामायण में भी छत्तीसगढ़ के बीहड़ वनों तथा महानदी का स्पष्ट विवरण है। स्थित सिहावा पर्वत के आश्रम में निवास करने वाले श्रृंगी ऋषि ने ही अयोध्या में राजा दशरथ के यहाँ पुत्र्येष्टि यज्ञ करवाया था जिससे कि तीनों भाइयों सहित भगवान श्री राम का पृथ्वी पर अवतार हुआ। राम के काल में यहाँ के वनों में ऋषि-मुनि-तपस्वी आश्रम बना कर निवास करते थे और अपने वनवास की अवधि में राम यहाँ आये थे।

- इतिहास में इसके प्राचीनतम उल्लेख सन 639 ई० में प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्मवेनसांग के यात्रा विवरण में मिलते हैं।

- महाकवि कालिदास का जन्म भी छत्तीसगढ़ में हुआ माना जाता है।

- प्राचीन काल में दक्षिण-कौसल के नाम से प्रसिद्ध इस प्रदेश में मौर्यों, सातवाहनों, वकाटकों, गुप्तों, राजर्षितुल्य कुल, शरभपुरीय वंशों, सोमवंशियों, नल वंशियों, कलचुरियों का शासन था।

- क्षेत्रिय राजवंशों में प्रमुख थे: बस्तर के नल और नाग वंश, कांकेर के सोमवंशी और कवर्धा के फणि-नाग वंशी।

छत्तीसगढ़ की अर्थव्यवस्था

छत्तीसगढ़ की अर्थव्यवस्था

- छत्तीसगढ़ की अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से स्थापित की गई है: खनन, कृषि, ऊर्जा उत्पादन और विनिर्माण
- छत्तीसगढ़ का नाममात्र सकल राज्य घरेलू उत्पाद (जीएसडीपी) 2018-19 में crore 3.26 लाख करोड़ (यूएस $ 46 बिलियन) अनुमानित है। जो भारत में 17 वीं सबसे बड़ी राज्य अर्थव्यवस्था है
- 2017-18 में छत्तीसगढ़ की अर्थव्यवस्था में 6.7% की वृद्धि दर दर्ज की गई
- उच्च विकास दर हासिल करने में छत्तीसगढ़ की सफलता के कारक कृषि और औद्योगिक उत्पादन में वृद्धि है
- छत्तीसगढ़ भारत के उन कुछ राज्यों में से एक है जहाँ बिजली क्षेत्र का प्रभावी विकास हुआ है
- इस्पात उदयोग छत्तीसगढ़ के सबसे बड़े भारी उदयोगों में से एक है। भिलाई इस्पात संयंत्र, सेल द्वारा संचालित भिलाई, प्रति वर्ष 5.4 मिलियन टन की क्षमता के साथ, राज्य का एक महत्वपूर्ण विकास संकेतक माना जाता है।

छत्तीसगढ़ की अर्थव्यवस्था

- राज्य में उपस्थिति वाली प्रमुख कंपनियों में शामिल हैं:
  - धातु: भिलाई स्टील प्लांट, जिंदल स्टील एंड पावर, भारत एल्युमीनियम कंपनी
  - तेल: इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन, हिंदुस्तान पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड
  - खनन: एनएमडीसी, दक्षिण पूर्वी कोलफील्ड्स
  - पावर: एनटीपीसी, लैंको इन्फ्राटेक, केएसके एनर्जी वेंचर्स, जिंदल पावर लिमिटेड

छत्तीसगढ़ के जिले

- छत्तीसगढ़ राज्य गठन के समय यहाँ सिर्फ 16 जिले थे पर बाद में 2 नए जिलो की घोषणा की गयी जो कि नारायणपुर व बीजापुर थे।
- इसके बाद छत्तीसगढ़ के पूर्व मुख्यमंत्री डॉ रमन सिंह ने 15 अगस्त 2011 को 9 और नए जिलो कि और घोषणा कि जो 1 जनवरी 2012 से अस्तित्व में आ गये।
- 15 अगस्त 2019 को छत्तीसगढ़ की नई सरकार के मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने बिलासपुर जिले से काट कर 1 नए जिले के निर्माण की घोषणा की।
- इस तरह अब छत्तीसगढ़ में कुल 28 जिले हो गए हैं

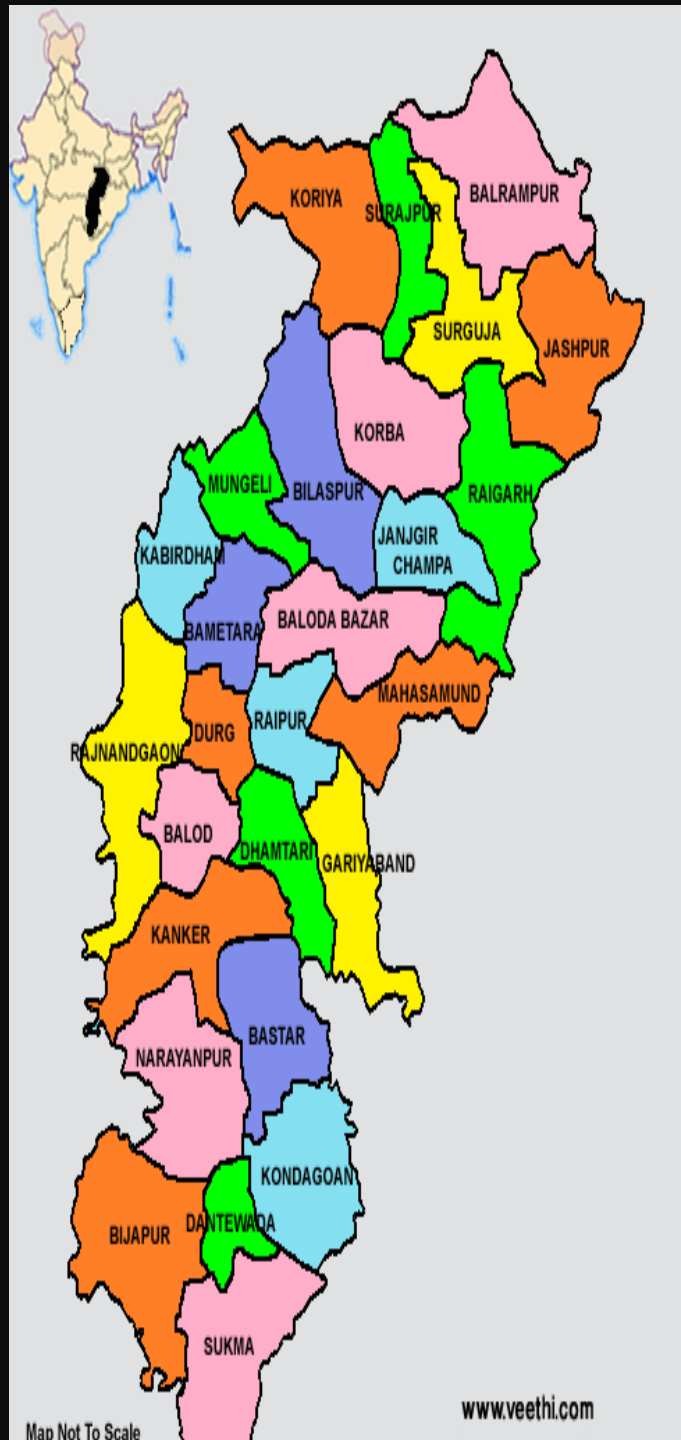

छत्तीसगढ़ - कृषि

- छत्तीसगढ़ में कृषि को राज्य के प्रमुख आर्थिक व्यवसाय के रूप में गिना जाता है।
- एक सरकारी अनुमान के अनुसार, राज्य का शुद्ध बोया गया क्षेत्र 4.828 मिलियन हेक्टेयर और सकल बोया गया क्षेत्र 5.7 मिलियन मिलियन हेक्टेयर है।
- बागवानी और पशुपालन भी राज्य की कुल आबादी का एक बड़ा हिस्सा हैं।
- राज्य की लगभग 80% आबादी ग्रामीण है और ग्रामीणों की मुख्य आजीविका कृषि और कृषि आधारित लघु उद्योग है।
- हालांकि 80% से अधिक जनसंख्या का मुख्य व्यवसाय कृषि है

छत्तीसगढ़ - कृषि

- कृषि उत्पाद:
  - मुख्य फसलें हैं चावल, मक्का, कोदो-कुटकी और अन्य छोटी बाजरा और दालें (तुअर और कुल्थी)
  - मूंगफली (मूंगफली), सोयाबीन और सूरजमुखी जैसे तिलहन भी उगाए जाते हैं।
  - 1990 के दशक के मध्य में, छत्तीसगढ़ का अधिकांश हिस्सा अभी भी एक मोनोक्रॉप बेल्ट था

छत्तीसगढ़ - कृषि

- सिंचाई:

➢ छत्तीसगढ़ में, चावल, मुख्य फसल, शुद्ध बोए गए क्षेत्र के लगभग 77% पर उगाया जाता है।

➢ केवल 20% क्षेत्र सिंचाई के अधीन है, बाकी बारिश पर निर्भर करता है।

➢ दोहरी फसल के लिए उपलब्ध सिंचित क्षेत्र छत्तीसगढ़ के मैदानों में केवल 87,000 हेक्टेयर और बस्तर पठार और उत्तरी पहाड़ियों में 2300 हेक्टेयर है।

Northern Hills
Korba
Bilaspur
Janjgir
Raipur
Durg
CG Plains
Dhamtari
Kanker
Bastar
Dantewada
Bastar Plateau

छत्तीसगढ़ का भूगोल

छत्तीसगढ़ का भूगोल

- छत्तीसगढ़ के उत्तर में उत्तर प्रदेश
- उत्तर-पश्चिम में मध्यप्रदेश का शहडोल संभाग
- उत्तर-पूर्व में उड़ीसा और झारखंड
- दक्षिण में तेलंगाना, आंध्रप्रदेश
- पश्चिम में महाराष्ट्र राज्य स्थित हैं

छत्तीसगढ़ का भूगोल

- यह प्रदेश ऊँची नीची पर्वत श्रेणियों से घिरा हुआ घने जंगलों वाला राज्य है।
- यहाँ साल, सागौन, साजा और बीजा और बाँस के वृक्षों की अधिकता है। यहाँ सबसे ज्यादा मिस्रित वन पाया जाता है।
- यहाँ सबसे ज्यादा मिस्रित वन पाया जाता है।
- सागौन की कुछ उन्नत किस्म भी छत्तीसगढ़ के वनो में पायी जाती है।

छत्तीसगढ़ का भूगोल

- मैदानी क्षेत्र के उत्तर में है मैकल पर्वत शृंखला। सरगुजा की उच्चतम भूमि ईशान कोण में है।
- पूर्व में उड़ीसा की छोटी-बड़ी पहाड़ियाँ हैं और आग्नेय में सिहावा के पर्वत शृंग है।
- दक्षिण में बस्तर भी गिरि-मालाओं से भरा हुआ है।
- छत्तीसगढ़ के तीन प्राकृतिक खण्ड हैं : उत्तर में सतपुड़ा, मध्य में महानदी और उसकी सहायक नदियों का मैदानी क्षेत्र और दक्षिण में बस्तर का पठार।

छत्तीसगढ़ का भूगोल

- राज्य की प्रमुख नदियाँ हैं - महानदी, शिवनाथ, खारुन,सोंढूर, अरपा, पैरी तथा इंद्रावती नदी।

- छत्तीसगढ़ क्षेत्र के बीच में महानदी और उसकी सहायक नदियाँ एक विशाल और उपजाऊ मैदान का निर्माण करती हैं, जो लगभग 80 कि॰मी॰ चौड़ा और 322 कि॰मी॰ लम्बा है। समुद्र सतह से यह मैदान करीब 300 मीटर ऊँचा है।

- इस मैदान के पश्चिम में महानदी तथा शिवनाथ का दोआब है। इस मैदानी क्षेत्र के भीतर हैं रायपुर, दुर्ग और बिलासपुर जिले के दक्षिणी भाग।

छत्तीसगढ़ – वनस्पति और जीव

- छत्तीसगढ़ राज्य का 45% भाग वन से आच्छादित है।
- राज्य के एक बड़े हिस्से को आवरण करने वाले कनगघाटी राष्ट्रीय उद्यान जैसे वन्यजीवों की भी बड़ी संख्या है।
- इसके जंगलों का एक प्रमुख हिस्सा सागौन और बांस से बना है।
- बस्तर में आम पक्षियों की कुछ विशिष्ट किस्में भी पाई जाती हैं। उदाहरण के लिए, जंगल कौवा गहरे रंग का होता है और घरेलू कौवे से थोड़ा बड़ा होता है।
- राज्य के प्रमुख पर्यटक आकर्षणों में से एक वन्यजीव क्षेत्र है।

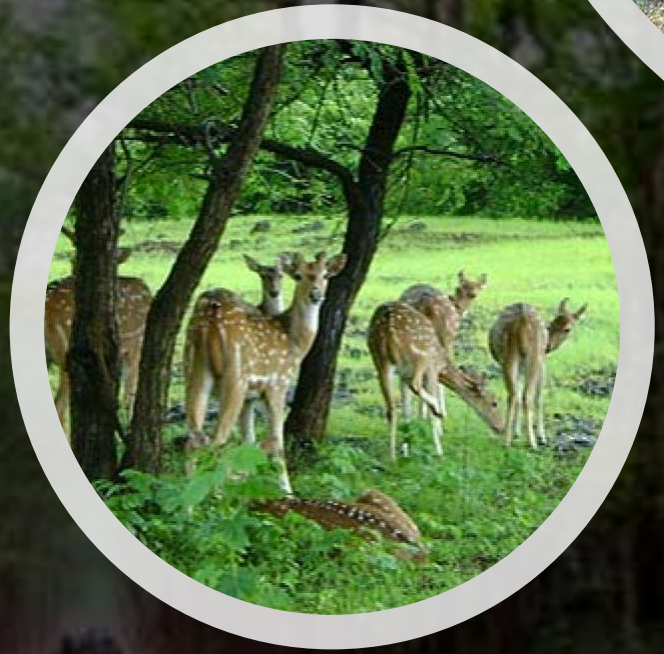

छत्तीसगढ़ – वनस्पति और जीव

- मवेशी एग्रेट, तालाब बगुला, बब्बर, तोता, वैगेल, बटेर (दोनों काले और भूरे रंग की किस्में), बुलबुल, कोएल, फ्लाई कैचर, कठफोड़वा, सूरज पक्षी और बुनकर पक्षी।
- प्रमुख वन्यजीव प्रजातियों में नीला बैल, चिंकारा, काला हिरन, सांभर, बार्किंग हिरण, जंगली कुत्ता, जंगली सूअर, सियार, लकड़बग्घा और मगरमच्छ शामिल हैं।
- पैंथर लगभग पूरे बस्तर में वितरित हैं, खासकर उत्तरी मैदानों में।
- भारतीय सुस्ती भालू कांकेर के आसपास के उत्तरी मैदानों में और दक्षिणी भाग में बैलाडीला के आसपास हैं।
- बाइसन कुटरू नेशनल पार्क में हैं। भैसा-दरहा में कांगेर घाटी नेशनल पार्क में नदी तालाबों में मगरमच्छ हैं।

CHHATTISGARH

राज्य - पक्षी पहाड़ी मैना

Bastar hill myna

राज्य पशु - जंगली भैंस

Wild buffalo

राष्ट्रीय उद्यान सूची

- अचनकमार वन्यजीव अभयारण्य, मुंगेली 1975
- बादलखोल वन्यजीव अभयारण्य, जशपुर 1975
- बर्नवापारा वन्यजीव अभयारण्य, बालोदाबाजार 1976
- भैरमगढ़ वन्यजीव अभयारण्य, बीजापुर 1983
- भोरमदेव वन्यजीव अभयारण्य, कवर्धा 2001
- सारंगढ़ गोमर्डा वन्यजीव अभयारण्य, सारंगढ़ 1975
- नामित जंगली भैंस वन्यजीव अभयारण्य, बस्तर 1985
- सेमरसोत वन्यजीव अभयारण्य, अंबिकापुर 1978
- सीतानदी वन्यजीव अभयारण्य, धमतरी 1974
- तमोर पिंगला वन्यजीव अभयारण्य, सर्गुजा 1978
- उदंती जंगली भैंस वन्यजीव अभयारण्य, गरियाबंद 1985

वन्यजीव अभयारण्य सूची

- कांगेर घाटी राष्ट्रीय उद्यान, बस्तर जिला, 1982
- इंद्रावती राष्ट्रीय उद्यान, बीजापुर जिला, 1982
- गुरु घासी दास राष्ट्रीय उद्यान, 1981 कोरिया जिला

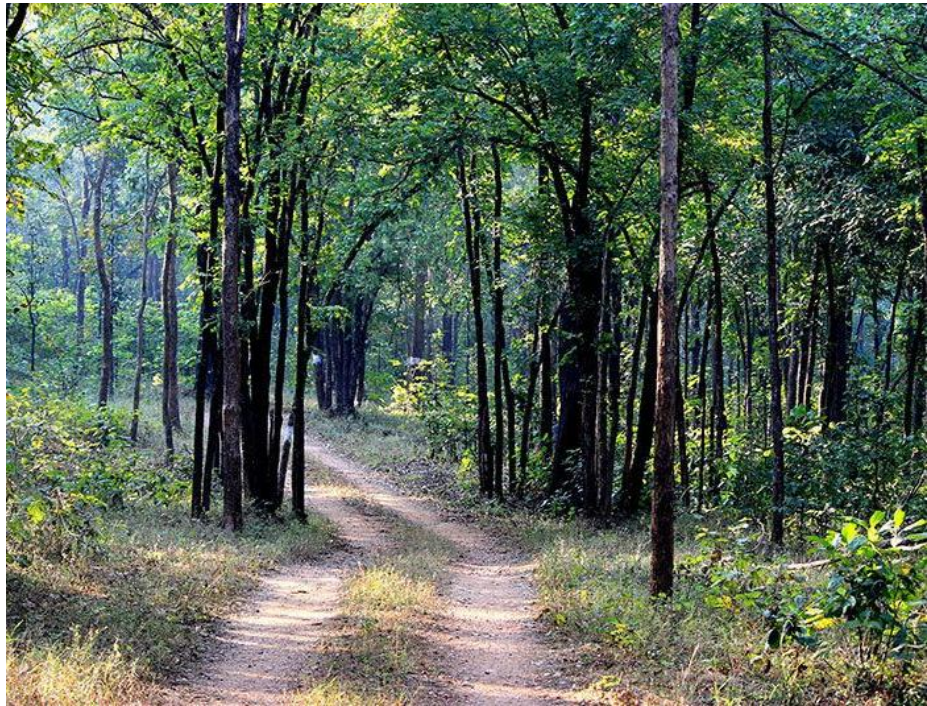

छत्तीसगढ़ की कला एवं संस्कृति

छत्तीसगढ़ की कला एवं संस्कृति

- आदिवासी कला काफी पुरानी है।
- छत्तीसगढ़ की संस्कृति में गीत एवं नृत्य का बहुत महत्व है। यहाँ के लोकगीतों में विविधता है।
- गीत आकार में अमूमन छोटे और गेय होते है एवं गीतों का प्राणतत्व है -- भाव प्रवणता।
- छत्तीसगढ़ के प्रमुख और लोकप्रिय गीतों में से कुछ हैं: भोजली, पंडवानी, जस गीत, भरथरी लोकगाथा, बाँस गीत, गऊरा गऊरी गीत, सुआ गीत, देवार गीत, करमा, ददरिया, डण्डा, फाग, चनौनी, राउत गीत और पंथी गीत।
- इनमें से सुआ, करमा, डण्डा व पंथी गीत नाच के साथ गाये जाते हैं।

छत्तीसगढ़ की भाषा एवं साहित्य

छत्तीसगढ़ की भाषा एवं साहित्य

- प्रदेश की आधिकारिक भाषा हिन्दी है और लगभग संपूर्ण जनसंख्या उसका प्रयोग करती है।
- प्रदेश की आदिवासी जनसंख्या हिन्दी की एक उपभाषा छत्तीसगढ़ी बोलती है।
- छत्तीसगढ़ी का जन्म अर्धमागधी के गर्भ से आज से लगभग 1080 वर्ष पूर्व नवीं-दसवीं शताब्दी में हुआ था।

छत्तीसगढ़ की भाषा एवं साहित्य

- छत्तीसगढ़ी भाषा में जो साहित्य रचा गया, वह करीब एक हज़ार साल से हुआ है।

- अनेक साहित्यको ने इस एक हजार वर्ष को इस प्रकार विभाजित किया है :
  - छत्तीसगढ़ी गाथा युग - सन् 1000 से 1500 ई. तक
  - छत्तीसगढ़ी भक्ति युग - मध्य काल, सन् 1500 से 1900 ई. तक
  - छत्तीसगढ़ी आधुनिक युग - सन् 1900 से आज तक

- यह विभाजन किसी प्रवृत्ति की सापेक्षिक अधिकता को देखकर किया गया है। एक और उल्लेखनीय बत यह है कि दूसरे आर्यभाषाओं के जैसे छत्तीसगढ़ी में भी मध्ययुग तक सिर्फ पद्यात्मक रचनाएँ हुई है।

छत्तीसगढ़ के पारंपरिक खेल

छत्तीसगढ़ के पारंपरिक खेल

- छत्तीसगढ़ी बाल खेलों में अटकन-बटकन लोकप्रिय सामूहिक खेल है।
- बालिकाओं द्वारा खेला जाने वाला फुगड़ी लोकप्रिय खेल है।
- लंगड़ी यह वृद्धि चातुर्थ और चालाकी का खेल है।
- खुड़वा पाली दर पाली कबड्डी की भांति खेला जाने वाला खेल है।
- डांडी पौहा गोल घेरे में खेला जाने वाला स्पर्द्धात्मक खेल है।
- गेड़ी बॉल छत्तीसगढ़ के लोकप्रिय खेलों में शामिल है।

छत्तीसगढ की प्रमुख जनजातियाँ

छत्तीसगढ़ की जातियाँ एवं जनजातियां

- छत्तीसगढ़ में कई जातियां और जनजातियां हैं।
- जनगणना 2011 के अनुसार छत्तीसगढ़ राज्य की कुल जनसंख्या में से 30.62 प्रतिशत (78.22 लाख) जनसंख्या अनुसूचित जनजातियों की है।
- अघरीया, गोंड, कंवर, बिंझवार ,उरांव, हल्बा, भतरा, सवरा आदि प्रमुख जनजातियाँ है। अबूझमाड़िया, कमार, बैगा, पहाड़ी कोरवा तथा बिरहोर राज्य के विशेष पिछड़ी जनजातियाँ हैं।
- इनके अतिरिक्त अन्य जनजाति समूह भी है, जिनकी जनसंख्या अपेक्षाकृत कम है।

छत्तीसगढ़ का खाना

छत्तीसगढ़ का खाना

- छत्तीसगढ़ की संस्कृति में खानपान की विशिष्ट और दुर्लभ परंपराएं हैं, जो हर प्रहर, बेला, मौसम और तीज-त्यौहार के मुताबिक सामने आती है।

- आदिवासी समाज का कलेवा यदि प्राकृतिक वनोपज है तो जनपदीय संस्कृति के वाहको का कलेवा अपनी विविधताओं से हतप्रभ करता है।

- मांगलिक और गैर-मांगलिक दोनों प्रसंग के व्यंजनों की अपार श्रृंखला है।

- ये व्यंजन भुने हुए, भाप में पकाए, तेल में तले और इन तीनों की बगैर सहायता से भी तैयार होते हैं।

छत्तीसगढ़ का खाना

- **तसमई**
  - छत्तीसगढ़ी तसमई खीर जैसा व्यंजन है। दूध, चांवल का यह पकवान विशेष अवसरो व खुशियों में विशेष तौर पर बनता है।जैसे आमला नवमी विवाह आदि अवसरो में।

- **खुरमी**
  - गेहूं तथा चावल के आटे के मिश्रण से निर्मित मीठी प्रकृति का लोकप्रिय व्यंजन है। .तीजा पोला के समय बनाया जाता है।

- **पपची**
  - गेहूं-चावल के आटे से बनी अनुष्ठानिक व्यंजन है। बालूशाही को भी मात कर सकती है। मीठी पपची, मंद आंच (धीमी आंच) में सेके जाने से कुरमुरी और स्वादिष्ट बने जाती है।

छत्तीसगढ़ का खाना

- **अनरसा**
  - चावल आटा और गुड़ की चाशनी से बना छत्तीसगढ़ी पकवानों का स्वादिष्ट रूप है। विशेष अवसरो में।
- **देहरौरी**
  - दरदरे चांवल और चाशनी में भींगी देहरौरी को रसगुल्ले का देसी रूप कह सकते हैं।
- **फरा**
  - फरा पके हुए चावल का बनाया जाता है मीठा फरा में गुड़ का घोल प्रयुक्त होता है और दूसरा भाप में पकाया हुआ जिसको बघार लगाकर अधिक स्वादिष्ट किया जाता है।
- **चौसेला**
  - हरेली, पोरा, छेरछेरा त्यौहारों में चांवल के आटे से तलकर तैयार किया जाने वाले इस व्यंजन का जायका गुड़ व आचार बढ़ा देते हैं।

छत्तीसगढ़ का खाना

- **ठेठरी**
  - ➢ लम्बी या गोल आकृति वाला यह नमकीन व्यंजन बेसन से बनता है।
- **करी**
  - ➢ करी, बेसन का मोटा सेव है, इसे नमक डालकर नमकीन करी बनाते हैं तथा बिना नमक के करी से गुड़ वाला मीठा लड्डू बनता है।
- **सोहारी**
  - ➢ शादि-ब्याह और भोज में पतली और बड़ी पूरी-सोहारी बनायी जाती है।
- **बरा**
  - ➢ उड़द दाल से बने इस व्यंजन का शादि-ब्याह तथा पितर में विशेष चलन है।
- **चीला**
  - ➢ चावल के आटे में नमक डालने से नुनहा चीला बनता है एवं घोल में गुड़ डाल देने से गुरहा चीला।

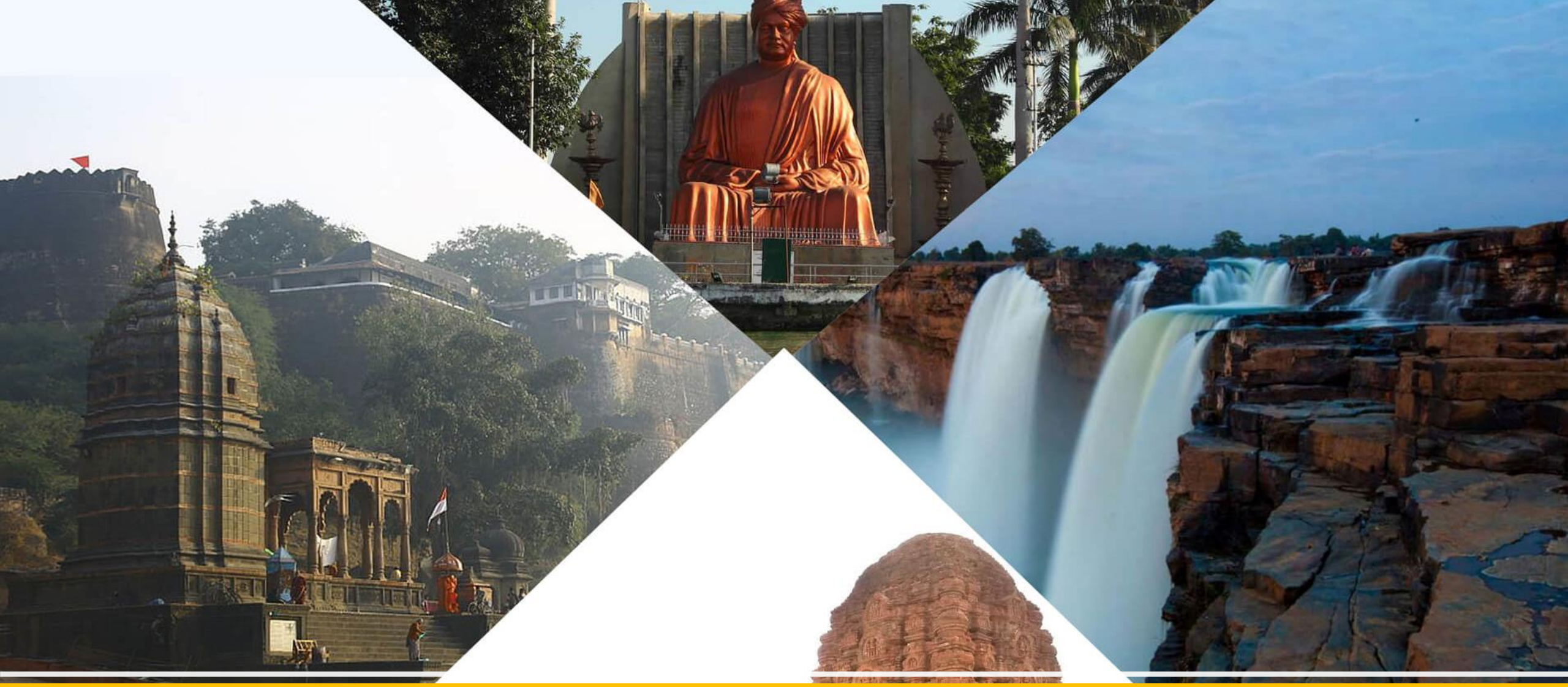

छत्तीसगढ़ के पर्यटन स्थल

छत्तीसगढ़ के पर्यटन स्थल

- **तान्दुला**

  - दुर्ग जिले में बालोद के पास बना विशाल बांध है। जिसका निर्माण तान्दुला नदी पर हुआ है। यहाँ पर लोग एक पिकनिक स्पॉट की तरह घूमने आते है।

छत्तीसगढ़ के पर्यटन स्थल

- मल्हार
  - बिलासपुर जिले में स्थित पुरातात्विक महत्व का यह ग्राम हैं। उत्खनन से प्राप्त देउरी मन्दिर, पातालेश्वरी मन्दिर, डिंडेश्वरी मन्दिर यहां पर उल्लेखनीय हैं। देश की प्राचीनतम चतुर्भुज विष्णु प्रतिमा भी यहां देखने को मिलती है।

छत्तीसगढ़ के पर्यटन स्थल

- **तालागाँव**
  - छत्तीसगढ़ के प्रमुख पुरातात्विक स्थलों में से एक तालाग्राम बिलासपुर से 30किलोमीटर दूर मनियारी नदी के तट पर अवस्थित है।
  - देवरानी-जेठानी मन्दिर के अलावा यहां विष्णु की एक विलक्षण प्रतिमा प्राप्त हुई है, जिसके प्रत्येक अंग में जलचर, नभचर व थलचर प्राणियों को दर्शाया गया है।

छत्तीसगढ़ के पर्यटन स्थल

- **मैनपाट**

  - इसे छत्तीसगढ़ का शिमला कहा जाता है। यह सरगुजा जिले में स्थित एक पठार है।

  - यह प्राकृतिक रूप से अत्यधिक समृद्ध है। तिब्बती शरणार्थियों के एक बड़े समुदाय को यहां सन् 1962 में बसाया गया है।

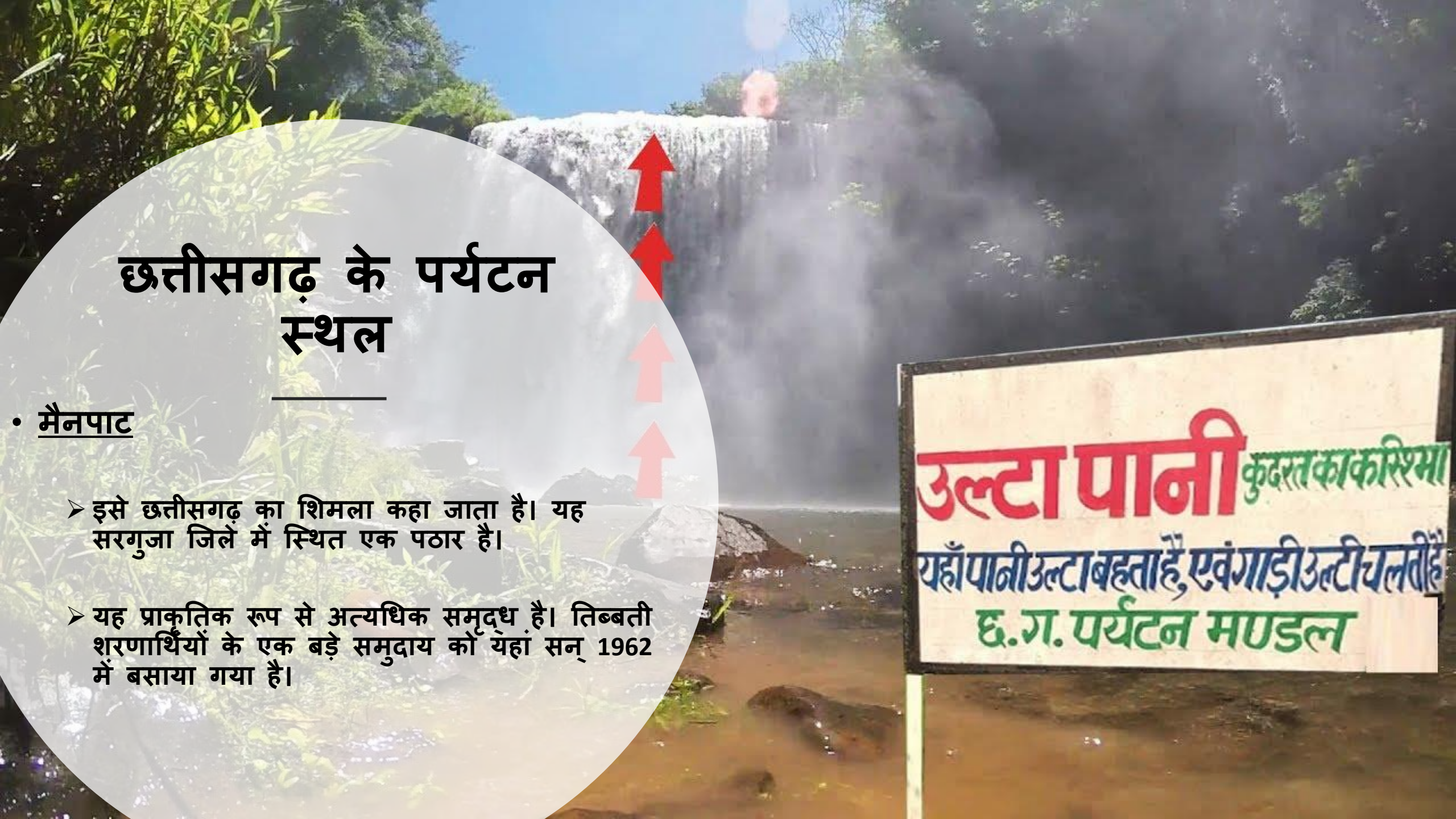

छत्तीसगढ़ के पर्यटन स्थल

- **चांग-भखार**

  - ➢ **सरगुजा जिले में स्थित चांग-भखार कलचुरी व चौहानकालीन मठों व मन्दिर के पुरावशेषों के लिये प्रसिद्ध है।**

  - ➢ **चांगभखार देवगढ पहाड़ी - छत्तीसगढ़ के उत्तरी भाग में पाया जाया है इसकी सबसे ऊँची चोटी देवगढ है जनकपुर, बैकुंठपुर, मनेन्द्र गढ़ , अंबिकापुर क्षेत्र में पाया जाता है**

छत्तीसगढ़ के पर्यटन स्थल

- **भोरमदेव**

➢ **भोरमदेव मंदिर** छत्तीसगढ के कबीरधाम जिले में कबीरधाम से 18 कि॰मी॰ दूर तथा रायपुर से 125 कि॰मी॰ दूर चौरागाँव में एक हजार वर्ष पुराना मंदिर है।

➢ इस मंदिर की बनावट खजुराहो तथा कोणार्क के मंदिर के समान है जिसके कारण लोग इस मंदिर को 'छत्तीसगढ का खजुराहो' भी कहते हैं।

➢ यह मंदिर एक एतिहासिक मंदिर है। इस मंदिर को 11वीं शताब्दी में नागवंशी राजा गोपाल देव ने बनवाया था।

छत्तीसगढ़ के पर्यटन स्थल

- **सेतगंगा**

  - सेतगंगा भारत के छत्तीसगढ़ प्रान्त का एक प्राचीन धार्मिक नगर है।
  - यह भारतवर्ष में एक ऐसा भी मंदिर है, जहां रावण भगवान राम के द्वारपाल के रूप में पूजे जाते हैं।
  - 10वीं 11वीं शताब्दी में निर्मित श्रीरामजान की मंदिर खूबसूरत शिल्प के साथ-साथ रावण की प्रतिमा के चलते मंदिर की चर्चा देश भर में होती है।
  - रावण की प्रतिमा को दवारपाल के रूप में स्थापित करने के पीछे मंशा यहीं है कि कोई भी व्यक्ति ज्ञानी रावण की अच्छाइयों को जानने और अपने भीतर के अहंकार को मिटाने के बाद ही मंदिर में प्रवेश करें।

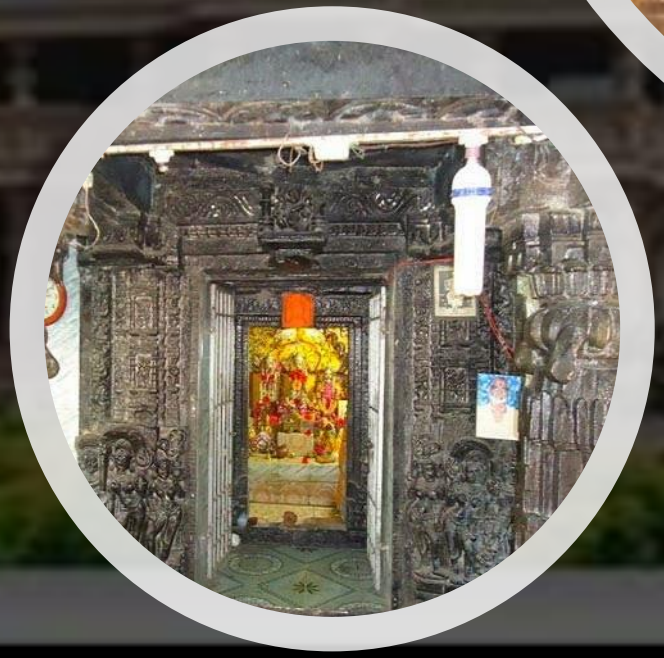

छत्तीसगढ़ के पर्यटन स्थल

- **मंडवा महल**

➢भोरमदेव से आधा किलोमीटर दूर चौराग्राम के पास पत्थरों से निर्मित शिव मन्दिर है। यह 14वीं शताब्दी का जीर्ण-शीर्ण मन्दिर है। इसकी बाह्य दीवारों पर मैथुन मूर्तियां बनी हुई हैं।

छत्तीसगढ़ के पर्यटन स्थल

- **बैलाडीला**
  - ➢बस्तर जिले में स्थित बैलाडीला की खदानें विश्व प्रसिद्ध हैं। यहां का लोहा जापान को निर्यात किया जाता है।
  - ➢नंदीराज पर्वत की आकृति बैल के कुबड़ के समान है जिसके कारण इस क्षेत्र को बैलाडिला के नाम से जाना जाता है।
  - ➢बस्तर की बैलाडिला पहाड़ी श्रृंखला अपने शुद्ध लौह अयस्क के लिये पुरे विश्व में मशहूर है। यहां की लौह खदान पुरे एशिया में सबसे बड़ी लौह खदानों में से एक है।

छत्तीसगढ़ के पर्यटन स्थल

- **चम्पारण**

➢चम्पारण शहर, जिसे पहले चम्पाजहर के नाम से जाना जाता था, राजिम से 15 किमी. की दूरी पर स्थित है।

➢चम्पारण एक प्रसिद्ध वैष्णव पीठ है जो संत वल्लभाचार्य का जन्मस्थान है जो वैष्णव सम्प्रदाय के संस्थापक थे।

छत्तीसगढ़ के पर्यटन स्थल

- **सिरपुर**

  - **सिरपुर** छत्तीसगढ़ में महानदी के तट स्थित एक पुरातात्विक स्थल है
  - इस स्थान का प्राचीन नाम श्रीपुर है यह एक विशाल नगर हुआ करता था तथा यह दक्षिण कोशल की राजधानी थी।
  - सोमवंशी नरेशों ने यहाँ पर राम मंदिर और लक्ष्मण मंदिर का निर्माण करवाया था।
  - ईंटों से बना हुआ प्राचीन लक्ष्मण मंदिर आज भी यहाँ का दर्शनीय स्थान है। उत्खनन में यहाँ पर प्राचीन बौद्ध मठ भी पाये गये हैं।

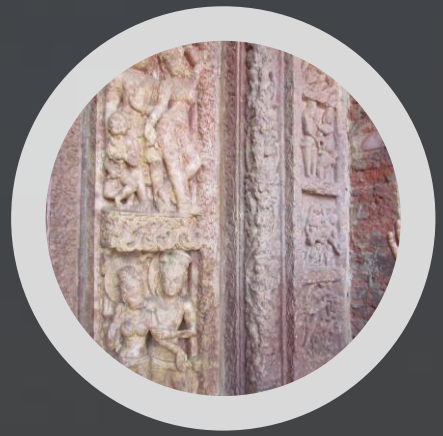

छत्तीसगढ़ के पर्यटन स्थल

- **चित्रकोट**

➢चित्रकोट जलप्रपात भारतीय राज्य **छत्तीसगढ़** में बस्तर जिले में जगदलपुर के पश्चिम में इंद्रावती नदी पर स्थित एक प्राकृतिक झरना है।

➢इसे भारत का नियाग्रा **फॉल्स** के रूप में भी जाना जाता हैं।

➢यह जलप्रपात लगभग 90 फीट की ऊंचाई से गिरता है और बारिश के मौसम में 150 मीटर तक चौड़ा होता है।

छत्तीसगढ़ के पर्यटन स्थल

• कुटुमसर गुफा

- कुटुमसर की गुफा जमीन से 55 फुट नीचे हैं। इनकी लंबाई 330 मीटर है।
- इस गुफा के भीतर कई पूर्ण विकसित कक्ष हैं जो 20 से 70 मीटर तक चौड़े हैं।
- विश्वप्रसिद्ध बस्तर की कुटुमसर गुफा कई रहस्यों को अभी भी अपने में समेटे हुए है जिनका द्वारा लगातार अध्ययन किया जा रहा है।
- एक अध्ययन से पता चला है कि करोड़ों वर्ष पूर्व प्रागैतिहासिक काल में बस्तर की कुटुमसर की गुफाओं में मनुष्य रहा करते थे।
- चूना पत्थर से बनी कुटुमसर की गुफाओं के आंतरिक और बाह्य रचना के अध्ययन के बाद शोधकर्ता कई निष्कर्षों पर पहुंचे हैं।

अस्वीकरण

नेहरू युवा केंद्र रायपुर छत्तीसगढ़ दी गयी जानकारी एवं छायाचित्रों की ज़िम्मेदारी नहीं लेता है। छायाचित्र एवं जानकारी कीज़िम्मेदारी इनके स्वामी की है नेहरू युवा केंद्र रायपुर छत्तीसगढ़ का इसमें कोई अधिकार नहीं है। यह पॉवरपॉइंट प्रेजेंटेशन का उद्देश्य सिर्फ शैक्षिक और सूचनात्मक जानकारी युवाओं तक पहुँचाना था।

धन्यवाद!!

नेहरू युवा केंद्र रायपुर छत्तीसगढ़

युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय

भारत सरकार